क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन (भाग-2)

बंगाली आतंकवाद में महिला भागीदारी उल्लेखनीय है। प्रीतिलता वाडेकर, कल्पना दत्त, शांति घोष, सुनीति चौधरी, बीना दास आदि ने क्रांतिकारी हमलों को अंजाम दिया।

बंगाल के क्रांतिकारियों ने व्यक्तिगत हत्या के बजाय औपनिवेशिक सत्ता के महत्वपूर्ण अंगों पर संगठित हमला करने की रणनीति बनाई जो उन्हें उत्तर भारत के क्रांतिकारियों से अधिक प्रभावकारी बनाता है।

इन क्रांतिकारी आंदोलनों को केवल असंतोष युवाओं की विद्रोही चेतना का विस्फोट नहीं माना जा सकता। भगत सिंह और उनके साथियों ने क्रांतिकारी दर्शन दिया। क्रांति का लक्ष्य बकायदा पारिभाषिक किया गया और आतंकवाद को साधन के तौर पर अपनाने के कारणों पर भी जमकर विमर्श हुआ।

ये युवा असाधारण बुद्धिजीवी थे जैसे भगत सिंह जिन्होंने द्वारकादास पुस्तकालय (लाहौर) में समाजवाद, सोवियत संघ और क्रांति-आंदोलन (रूस, आयरलैंड, इटली) से सम्बद्ध तमाम किताबों का गहराई से अध्ययन किया था। लाहौर तथा आगरा में उन्होंने 'स्टडी सर्किल' बनाए, पुस्तकालय खोले।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन का उद्देश्य उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन घोषित करना था जिनके तहत एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता है। भगत सिंह का स्पष्ट मानना था कि 'क्रांति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।' सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा शिव वर्मा, विजय सिन्हा, यशपाल सभी काफी पढ़े-लिखे लोग थे।

भगत सिंह का लक्ष्य समाजवादी था। 3 मार्च 1931 के अपने अंतिम संदेश में उन्होंने घोषणा की - भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक लोग अपने लाभ के लिए आम जनता का शोषण करते रहेंगे। इसका कोई खास महत्व नहीं है कि शोषक अंग्रेज पूँजीवादी है या अंग्रेज और भारतीयों का गठबंधन है या पूरी तरह भारतीय।

'द फिलोसॉफी ऑफ बम' में वोहरा ने क्रांति को सामाजिक

Scanned with CamScanner

राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता के रूप में परिभाषित किया।
राजनीति को धर्मनिरपेक्ष स्वरूप देने में भगत सिंह ने एक महान प्रवर्तक की भूमिका निभाई। वे कहते थे- साम्प्रदायिकता उतनी ही खतरनाक है जितना उपनिवेशवाद। नौजवान भारत सभा के छः नियमों में दो इस तरह थे- ऐसी किसी भी संस्था संगठन या पार्टी से किसी तरह का सम्पर्क न रखना जो साम्प्रदायिकता का प्रचार करती हो और धर्म को व्यक्ति का निजी मामला मानते हुए व्यक्ति के बीच सहनशीलता की भावना पैदा करना।

मौत के कुछ पहले जनता को अंधविश्वास की जकड़न से मुक्त करने के लिए "मैं नास्तिक क्यों हूँ" नामक लेख लिखा। उनके शब्दों में प्रगति के लिए संघर्षशील किसी भी व्यक्ति को अंधविश्वासों की आलोचना करनी ही होगी और पुरातनपंथी विचारों को चुनौती देनी ही होगी।

अब सवाल यह उठता है कि क्रांति को घटित करने के लिए इन पढ़े-लिखे युवाओं ने व्यक्तिगत हिंसा का रास्ता क्यों चुना? इसके शायद दो कारण थे- जल्दी से लक्ष्य हासिल करने की आकांक्षा और दूसरा आत्मबलिदान की भावना का प्रसार कर जनक्रांतिकारी दल के लिए कैडर तैयार करना।

सत्ता के दमन ने क्रांतिकारी आंदोलन का पराभव कर दिया। आंदोलन के पतन में कई अन्य कारकों का भी योगदान था। आंदोलन का सामाजिक आधार व्यापक नहीं था। ये जनता को राजनीतिक रूप से उद्वेलित करने या राजनीतिक संघर्ष में शरीक करने में असफल रहे। व्यापक जनाधार के बिना व्यक्तिगत वीरता साम्राज्यवाद से कब तक लोहा लेती।

(ii) केन्द्रीय संगठन का अभाव था, इनके साधन सीमित थे।

(iii) क्रांतिकारियों का सिद्धांत आदर्शवादी था जो व्यावहारिक रूप नहीं ले पाया। वे किसानों तथा मजदूरों की बात तो करते थे किंतु उनका सामाजिक आधार शहरी बुर्जुवाओं के बीच रहा।

(iv) इनकी कार्यपद्धति में हिंसा की प्रधानता थी जिस शक्ति के खिलाफ वे लड़ रहे थे उसके विरुद्ध व्यक्तिगत हिंसा से सफलता प्राप्त करना कठिन था।

(v) इनके प्रति कांग्रेस का दृष्टिकोण उदासीन था।

Scanned with CamScanner

विदेशों में आतंकवादी घटनाएँ वैश्विक राजनीति को प्रभावित रही। अमेरिका जब मित्रराष्ट्रों के साथ हो गया तो वहाँ से क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बंद करना पड़ा।

(vi) गाँधीजी के आगमन से इस आंदोलन को धक्का लगा। उनके अहिंसा के सिद्धांत ने क्रांतिकारियों की व्यक्तिगत हिंसा की जड़ खोद दी।

इन कतिपय कमियों के बावजूद क्रांतिकारी आंदोलन के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। क्रांतिकारियों ने जनमानस में देशभक्ति और बलिदान की भावना जागृत की और इस तरह से राष्ट्रीयता के विकास में सहायक सिद्ध हुआ। इसने समाजवादी आदर्शों की स्थापना का प्रयास किया। 1909 के मार्ले-मिंटो सुधार को क्रांतिकारियों के दबाव के अप्रत्यक्ष परिणाम के रूप में देखा जा सकता है। वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में विधि सदस्य के रूप में लॉ एस॰ पी॰ सिन्हा की नियुक्ति क्रांतिकारियों के दबाव से पैदा हुये नतीजा के रूप में देखा जा सकता है। बंगाल विभाजन का रद्दीकरण और राजधानी का कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरण भी इन्हीं क्रांतिकारी दबाव के परिपेक्ष्य में समझा जा सकता है।

वस्तुतः क्रांतिकारी आंदोलन का लक्ष्य एवं उसकी प्राप्ति के आधार पर उपलब्धियों को कम आंकना अथवा असफल कहना न्यायसंगत नहीं है। यह सही है कि क्रांतिकारी आतंकवादी भारत से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने में सफल नहीं हुये किंतु लक्ष्यों की पूर्ण प्राप्ति तो गाँधीवादी आंदोलनों को भी नहीं मिली थी। 1920-22, 1930-34 तथा 1942 के आंदोलनों के तहत स्वराज्य, पूर्ण स्वराज्य एवं भारत-छोड़ो जैसी माँगें तुरंत तो पूरी नहीं हो पाई लेकिन क्या ये आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में मील के पत्थर साबित नहीं हुए? यदि इस लिहाज से देखें तो क्रांतिकारी आतंकवादियों ने भारत के युवकों में जागृति फैलाने और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में जुट जाने में जो भूमिका निभाई वह किसी से कम नहीं है। बारीन्द्र घोष ने कहा था- "इन तरीकों यानी अंग्रेजों को मारने से हम देश को आजाद करवाने की आशा नहीं रखते थे, मगर हम लोगों को दिखाना चाहते थे कि देश के लिए किस तरह के साथ मरने के लिए तैयार रहना चाहिए।" वस्तुतः राष्ट्रीय आंदोलन एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न वैचारिक आयामों से होकर गुजरा

जिसमें एक आयाम क्रांतिकारी विचारधारा का भी था।

Scanned with CamScanner